इन्द्र-इन्द्राणी

1. सौधर्म इन्द्र श्री अशोककुमार जैन एवं श्रीमती किरण जैन, इन्दौर
2. कुबेर श्री मुकेश जैन एवं श्रीमती सोनल जैन, इन्दौर

इन्दसभा के सदस्य इन्द्रगण

1. श्री अरिहन्त चौधरी एवं श्रीमती दिव्या चौधरी, किशनगढ़
2. श्री प्रेमचंद गुरहा एवं श्रीमती राजेश गुरहा, रायपुर
3. श्री अभिषेक मूथा एवं श्रीमती जयश्री मूथा, कोलकाता
4. श्री सिद्धार्थ बड़जात्या एवं श्रीमती कीर्ति बड़जात्या, इन्दौर
5. श्री मीत एवं श्रीमती निशा काला, कोलकाता
6. श्री साकेत जैन एवं श्रीमती पूजा जैन, शिवपुरी
7. श्री अरुण जैन एवं श्रीमती लक्ष्मी जैन, शिवपुरी
8. डॉ. अरुण दोडल एवं श्रीमती मीना दोडल, मुम्बई
9. श्री आशीष जैन एवं श्रीमती स्वानुभूति जैन, मुम्बई
10. श्री कैलाशचन्द एवं श्रीमती सुषमा छाबड़ा, मुम्बई
11. श्री नरेश मोदी एवं श्रीमती सुनीता मोदी, नागपुर
12. श्री अजित तोतुका एवं श्रीमती शशि तोतुका, जयपुर
13. श्री निहालचंद जैन एवं श्रीमती अचरजदेवी जैन जयपुर

अन्य प्रमुख पात्र एवं सहयोगकर्त्ता

आहारदान हेतु राजा श्रेयांश	श्री अशोककुमार पाटनी परिवार, कोलकाता
राजा सोम परिवार	श्री अनंतभाई ए. सेठ एवं निमिषभाई केतनभाई परिवार, मुम्बई
महोत्सव के ध्वजारोहणकर्ता	....
सिंहद्वार के उद्घाटनकर्ता	श्रीमती भानूबेन एवं हितेश-सतीश दोशी परिवार, मुम्बई
प्रतिष्ठा मण्डप के उद्घाटनकर्ता	श्री कमलकुमार बड़जात्या, मुम्बई एवं श्री मुकेश जैन, इन्दौर
प्रतिष्ठा मंच के उद्घाटनकर्ता	श्री अनिल कामदार, मुम्बई
विधि अध्यक्ष विराजमानकर्ता	श्री राजकुमार जैन, सहारनपुर

वीतराग-विज्ञान

पंचकल्याणक महोत्सव विशेषांक

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 343 अंक : 7

पंचकल्याणक महोत्सव

आओ भव्यो आओ भव्यो हिल-मिलकर आ हर्षाओ।
पंचकल्याणक महोत्सव में आ श्री जिनवर के गुण गाओ।।टेक।।
गर्भ कल्याण महोत्सव देखो, रत्नों की वर्षा भी देखो।
सोलह स्वप्नों का फल सुनकर अन्तर मन में हर्षाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।1।।
प्रभु का जन्म कल्याण देख लो गिरि सुमेरु अभिषेक देख लो।
नृत्यगान इन्द्रों का देखो, नाचो, गाओ, हर्षाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।2।।
जिनवर को मुनि होते निरखो, संयम भाव स्वयं का परखो।
तप कल्याण मना, अहार दे मुनि प्रभु की जय जय गाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।3।।
केवलज्ञान कल्याणक देखो, समवशरण की रचना देखो।
द्वादश सभा मध्य जा बैठो, आत्मज्ञान वैभव पाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।4।।
श्री जिनवर का मोक्ष कल्याणक, परमशान्ति शिव सुख का दायक।
सिद्ध शिला के दर्शन कर लो, महा मोक्ष मंगल गाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।5।।
पाँचों कल्याणक पूजन कर, भक्तिभाव से प्रभु दर्शन कर।
नाचो, गाओ हर्ष मनाओ, शुद्ध भाव उर में लाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।6।।
पाप पुण्य के भाव विनाशो, शुद्ध भाव ही हृदय प्रकाशो।
श्रेष्ठ पंच कल्याणक पूजो परमानंद हृदय पाओ।।
पंचकल्याणक महोत्सव में... ।।7।।

- कविवर राजमलजी पवैया

सम्पादकीय –

एक आदर्श पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

इस परमपावन भारतवर्ष में हजारों जिनमंदिर हैं और उनमें लाखों जिनबिम्ब (अरहंत अवस्था की मूर्तियाँ) विराजमान हैं; जिनके दर्शन, पूजन और भक्ति प्रतिदिन लाखों जैन भाई-बहिन करते हैं। इस देश में लाखों लोग तो ऐसे हैं; जो उनके दर्शन किये बिना, उनकी पूजन किये बिना भोजन भी नहीं करते।

जिनमंदिरों में विराजमान जिनबिम्बों का अपना एक महत्व है। वे जिनबिम्ब हमारी संस्कृति के प्रतीक ही नहीं, संरक्षक भी हैं। सम्पूर्ण देश में बिखरे हुये लाखों जिनबिम्ब हमारे समृद्ध अतीत के सबूत तो हैं ही; यह भारतभूमि हमारी मूल भूमि है, इसके सशक्त प्रमाण भी हैं। जैनदर्शन मूलत: भारतवर्ष का ही दर्शन है। यह कहीं से यहाँ आया नहीं है।

पाषाणों में उत्कीर्ण और धातुओं से ढले ये वीतरागी जिनबिम्ब तब तक पूजने योग्य नहीं माने जाते; जब तक कि उनकी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा नहीं हो जाती।

इसी प्रतिष्ठाविधि को सम्पन्न करने के लिये जो महोत्सव होता है, उसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव कहते हैं।

देश या विदेशों में विद्यमान जैन मन्दिरों में जितने भी जिनबिम्ब विराजमान हैं; वे सभी इन पंचकल्याणकों में ही प्रतिष्ठित हुये हैं और भविष्य में भी जितने जिनबिम्ब विराजमान होंगे; वे सब भी इसी विधि से विराजमान होंगे।

इसप्रकार यह दिगम्बर जैन समाज का एक अत्यंत उपयोगी और आवश्यक महोत्सव है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का महोत्सव है। इस महोत्सव में पंचकल्याणक संबंधी क्रिया-प्रक्रियाओं के माध्यम से आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का प्रदर्शन होता है, विद्वानों के प्रवचनों के माध्यम से समागत श्रद्धालुओं को आत्मा से परमात्मा बनने की विधि बताई जाती है।

कल्याणक पाँच होते हैं – गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, तप कल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और मोक्ष कल्याणक। यही कारण है कि इस महोत्सव को पंचकल्याणक महोत्सव कहते हैं।

'कल्याणं करोतीति कल्याणक:' उक्त सूक्ति के अनुसार कल्याण करने वाले को कल्याणक कहते हैं। ये पाँचों ही कल्याणक आत्मा के कल्याण के उत्कृष्ट निमित्त होने के कारण कल्याणक कहलाते हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि ये पंचकल्याणक भी उतने ही पुरातन हैं कि जितने पुरातन

कृत्रिम जिनबिम्ब, कृत्रिम जिनमंदिर है। कहते हैं कि भरत चक्रवर्ती ने कैलाश पर्वत पर अनेक जिनबिम्बों की स्थापना की थी। इससे सिद्ध होता है कि भगवान आदिनाथ और भरत चक्रवर्ती जितने पुरातन हैं; ये पंचकल्याणक महोत्सव भी उतने ही प्राचीन हैं।

ध्यान रहे भरत चक्रवर्ती के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है।

इन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों का स्वरूप प्राचीन काल में कैसा रहा होगा, यह प्राचीन शास्त्रों के स्वाध्याय से जाना जा सकता है। भगवान ऋषभदेव का पंचकल्याणक मूलत: कैसा हुआ था; यह भी आदिपुराण के स्वाध्याय से कुछ-कुछ जाना जा सकता है। उक्त संदर्भ में हमारे मार्गदर्शन के लिये अनेक प्रतिष्ठापाठ भी उपलब्ध हैं; पर हम स्वयं अपने इस अल्प जीवन में देख रहे हैं कि न केवल विभिन्न प्रान्तों में, अपितु विभिन्न सम्प्रदायों में परस्पर कितनी विभिन्नता है।

प्रत्येक प्रान्त व प्रत्येक सम्प्रदाय में भी निरन्तर अप्रत्याशित परिवर्तन हो रहे हैं; जो इनके वीतरागी स्वरूप को विकृत करते जा रहे हैं। वीतरागता के स्थान पर रागात्मक क्रियाओं की प्रमुखता होती जा रही है। लम्बे-लम्बे जुलूस और नाच-गाने की भरमार होती जा रही है। वीतरागी भगवान के वीतरागी जिनबिम्बों के प्रतिष्ठा महोत्सवों में रागात्मक प्रवृत्तियों की बहुलता शोभा नहीं देती।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में होने वाले इस पंचकल्याणक महोत्सव के माध्यम से हम पंचकल्याणक के वीतरागी स्वरूप को पुन: प्रतिष्ठित करना चाहते हैं; एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते हैं; जिसमें सावद्य तो कम से कम हो; पर वीतरागी तत्त्वज्ञान की प्रतिष्ठा अधिकतम हो। आचार्य समन्तभद्र के **'सावद्य लेशो बहु पुण्यराशौ'** - हिंसादि सावद्य कम से कम हो और पुण्य का, पवित्रता का ढेर हो - इस आदर्श को प्रस्तुत करना चाहते हैं, उनके आदेश का पालन करना चाहते हैं।

यह महामहोत्सव राग से वीतरागता की ओर ले जाने वाला महोत्सव है, अल्पज्ञता से सर्वज्ञता की ओर ले जाने वाला महोत्सव है; अत: हम चाहते हैं कि इस महामहोत्सव में सर्वत्र सात्विकता का साम्राज्य हो, शुद्ध सात्विक सादा खान-पान, वीतरागता के पोषक गीत-संगीत, वीतरागी तत्त्वज्ञान को स्पष्ट करने वाले प्रवचन, छोटी-छोटी शोभायात्रायें और यदि सद्भाग्य से कुछ आर्थिक बचत हो जावे तो उसे वीतरागी तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिये समर्पित जैनदर्शन के ठोस विद्वान बनाने के काम में ही लगाया जाये; क्योंकि यह वीतरागी जैनदर्शन, जैनदर्शन के मर्मज्ञ एवं आत्मकल्याण के साथ-साथ वीतरागी जैनदर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के लिये समर्पित विद्वानों के माध्यम से ही पंचमकाल के अन्त तक सुरक्षित रहेगा।

इस दिशा में हमने अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं। देखें हमें इस शुद्ध सात्विक प्रयास में कितनी सफलता मिलती है? ●

आत्मा से परमात्मा बनने का महोत्सव

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर

आपने अपने जीवन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव तो बहुत देखे होंगे; परन्तु उन आयोजनों में आप अब तक यह शायद ही जान पाये होंगे कि इन सभी कार्यक्रमों में आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया क्या है?

यह तो एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है, सत्य है कि साक्षात् अरहन्त भगवान के अभाव में उनकी प्रतिमा वही काम करती है, जो साक्षात् अरहन्त भगवान करते हैं। कहा भी है -

''जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही जिनागम मांहि।''

साक्षात् समवशरण में भी हमें जिनेन्द्र भगवान के परमौदारिक पौद्गलिक शरीर के ही दर्शन होते हैं; क्योंकि अमूर्तिक वीतरागी भगवान आत्मा के दर्शन तो इन चर्म चक्षुओं से हो ही नहीं सकते।

लोक व्यवहार चलाने के लिए जिनागम में चार निक्षेपों का विधान है। नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव। इनमें स्थापना निक्षेप के दो भेद हैं (1) तदाकार स्थापना (2) अतदाकार स्थापना। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में वीतरागता की प्रतीक तदाकार जिन प्रतिमा में जिनेन्द्र देव की स्थापना (प्रतिष्ठा) की जाती है। प्रतिष्ठा से वे प्रतिमायें पूज्य हो जाती हैं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जिनेन्द्र भगवान के गर्भ कल्याणक से लेकर मोक्ष कल्याणक तक के सभी कार्यक्रमों का भव्य प्रदर्शन तो होता ही है, मंत्रोच्चारपूर्वक विधिनायक प्रतिमा एवं अन्य सभी प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा-विधि भी सम्पन्न होती है।

यह सप्त दिवसीय कार्यक्रम बहुत विशाल स्तर पर होता है। सारे देश-विदेश से हजारों व्यक्ति इसके साक्षी बनते हैं। बड़े-बड़े विद्वानों के माध्यम से जिनेन्द्र वाणी सुनने के अवसर मिलते हैं। दिनभर तो कार्यक्रम चलते हैं, रात को 10-11 बजे तक अनेक ज्ञान-वैराग्यवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

यद्यपि व्यवस्थापक यथासंभव अच्छी से अच्छी व्यवस्थायें करते हैं; परन्तु

घर जैसी सुख-सुविधायें तो संभव हो ही नहीं सकतीं, सभी आगंतुक महानुभाव यह भलीभाँति जानते हैं; अत: किसी को भी व्यवस्था सम्बन्धी कभी कोई शिकायत नहीं रहती अर्थात् उनका रुख अनुकूल ही रहता है। अस्तु।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से जयपुर में दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 में होने वाले उक्त आयोजन की सुव्यवस्था, अनावश्यक क्रियाओं को कम करने तथा आवश्यक वैराग्यवर्द्धक कार्यक्रमों को जोड़ने के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है, कुछ आश्वासन भी नहीं देना है। उसे तो आप स्वयं देखकर ही अनुभव करेंगे कि यह आयोजन सभी दृष्टियों से अभूतपूर्व हुआ है। आयोजन की पूर्व तैयारी से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आयोजन कैसा होगा ? मौसम के चुनाव से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि फरवरी माह में न अधिक गर्मी है, न अधिक ठंड। स्थान अतिभव्य, अतिविशाल, नगर के मध्य शिक्षा का केन्द्र, चारों ओर पक्की बाउंड्री, चारों ओर चार विशालगेट एवं सभी गेटों पर चौकीदारों की भरपूर व्यवस्था है, जिसे देखते ही दर्शकों का मन मयूर नाच उठेगा। आसपास अनेक विशाल होटल, बाउंड्री के अन्दर ही विशाल मैदान व पार्किंग की पूर्ण व्यवस्था।

यह स्थान यद्यपि पण्डित टोडरमल स्मारक भवन से लगभग 10 किलोमीटर है; परन्तु रेलवे स्टेशन से मात्र 3 किलोमीटर तथा शहर से भी नजदीक पड़ता है। इसे भवानी निकेतन नाम से जाना जाता है; क्योंकि यह पहले महाराजा भवानीसिंह की निजी सम्पत्ति थी, जो बाद में शिक्षा के लिए समर्पित कर दी गई। इसमें अभी प्राइमरी से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट, इंजीनियरिंग कालेज आदि शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है।

इसका कुछ भाग कम से कम शुल्क पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए दिया जाता है, जिससे प्राप्त आय प्राय: इसी के मेन्टीनेन्स में खर्च हो जाती है या शिक्षा के लिए काम में आती है।

इस महोत्सव में श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में वर्तमान 160 छात्रों के अतिरिक्त सभी भूतपूर्व लगभग 620 छात्र विद्वानों के समागम का सुयोग भी प्राप्त होगा। और नया क्या-क्या

होगा ? सब कुछ बता पाना यहाँ संभव नहीं है, वह सब कुछ जानने-देखने के लिए तो आपको यहीं आना होगा। यहाँ तो मैं इतना कहना/बताना चाहता हूँ कि भव्य पंचकल्याणक महोत्सव इसमें सक्रिय भाग लेने वालों के कल्याण में तो निमित्त बनेगा ही, दर्शकों एवं भगवान की वीतराग वाणी के भव्य श्रोताओं के कल्याण में भी निमित्त बनेगा। इसमें वीतरागी भगवान बनने की यथार्थ प्रक्रिया के प्रदर्शन के साथ सर्वज्ञ भगवान की दिव्यवाणी सुनने के अधिकतम अवसर प्राप्त होंगे, जो हमारे अनादिकाल से बंधे मोहादि कर्मक्षय में निमित्त होंगे।

इस आयोजन में बोलियों में अधिक समय खराब नहीं किया जायेगा। अति आवश्यक तात्कालिक लगने वाली बोलियाँ भी यथासंभव शीघ्र ही समाप्त कर दीं जायेगी। एतदर्थ बड़ी-बड़ी बोलियों के लिए पूर्व में ही सम्पर्क किया जा रहा है, ताकि उस समय अधिकतम काल का जिनवाणी श्रवण हेतु उपयोग किया जा सके।

गर्भकल्याणक एवं जन्म कल्याणक के दिनों में भी राग-रंग के कार्यक्रम आध्यात्मिक भावनाओं से भरपूर ही होंगे। वे भी जो अति आवश्यक व अनिवार्य होंगे, वे ही होंगे। इनमें यह ध्यान रखा जायेगा कि वे अरुचिकर न हों, सरस हों। राजा-रानी एवं इन्द्र-इन्द्राणी सत्पात्रों के तात्त्विक संवाद निश्चित ही श्रोताओं के हृदयों को छूनेवाले होंगे।

छोटी-छोटी बालिकाओं के आकर्षक नृत्यगान, अवश्य ही हमारे चित्त को आकर्षित करेंगे। सभी कार्यक्रम पूर्ण अहिंसक होंगे। किसी भी आयोजन में हाथी, घोड़ा, बैल आदि मूक पशुओं का उपयोग नहीं किया जायेगा। विशालकाय ऐरावत हाथी भी फाइबर आदि का होगा।

मुझे इस समय एक घटना याद आ रही है। जिसे कहे बिना मैं नहीं रह सकता। बात मध्यप्रदेश की है। उस पंचकल्याणक में राजमाता सिंधिया आई हुईं थीं, उनके सम्मान में जब हमने धागे की माला पहनाई तो उन्हें कुछ अटपटा सा लगा; उनसे नहीं रहा गया और उन्होंने मुझसे कहा – क्या यहाँ फूल उपलब्ध नहीं थे, जो धागों की मालाओं से स्वागत किया गया। तब मैंने उनका समाधान तो कर ही दिया तथा अपने भाषण में भी कहा कि हम जैन हैं और जैन लोग फूलों

की भक्ति उनके द्वारा प्रतिपादित या उनमें विद्यमान तत्त्वज्ञान का पोषक, प्रचारक और मर्यादा का पोषक हो, तभी वह आदर्श रूप ग्रहण कर सकेगा।

प्रतिष्ठा महोत्सव का उद्देश्य रुचिवान जीवों को रुचि का पोषण तथा रुचि विहीन लोगों को अध्यात्म की रुचि जाग्रत करने का हो, तभी महोत्सव अपना आदर्शरूप ग्रहण कर सकेगा। इसके लिये हमें निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है -

(1) पूजन-विधान आदि मध्यम स्वरों में पढ़े जायें, संगीत बहुत तेज न हो। समय-समय पर उनमें समागत सिद्धान्तों का मर्म भी बताया जाये।

(2) सायंकालीन भक्ति भी पंचपरमेष्ठी के गुणों की मुख्यता से हो। कर्तृत्व की पोषक तथा आधुनिक फिल्मी धुनों की भक्ति न हो।

(3) पूजन-भक्ति तथा अन्य प्रसंगों पर होने वाले नृत्य भी शालीन एवं मर्यादित हों। महिलाएँ और पुरुष एक साथ नृत्य न करें।

(4) भजन मण्डली द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले गीत भी प्रासंगिक और अध्यात्म रस से भरपूर हों।

(5) बोलियों में समय कम से कम लगाया जाये। जो समय बचे उसका उपयोग सामूहिक आध्यात्मिक पाठ में किया जाये, जिससे समागत साधर्मियों को अध्यात्म रस पान करने के अधिक अवसर मिल सकें।

(6) तप कल्याणक के दिन सभी साधर्मी भाई-बहन श्वेत वस्त्र धारण करें।

(7) अधिक से अधिक वक्ताओं के प्रवचन रखने के बदले अध्यात्म रस परिपाक हो सके - ऐसे चुने हुए वक्ताओं के प्रवचन रखे जायें।

(8) पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के मार्मिक बिन्दुओं का विशेष स्पष्टीकरण हो।

(9) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्राचीन कवियों की भजन संध्या, विद्यालयों के छात्रों द्वारा संक्षिप्त तात्विक नाटक प्रस्तुत किये जायें।

(10) शोभायात्रा में अनावश्यक बैण्ड न रखे जायें।

(11) भजन मण्डली के 2-3 वाहन हों, जिसमें उत्साहपूर्वक रथ-यात्रा गीत गाये जायें।

(12) शोभा यात्रा में पशुओं का उपयोग न किया जाये।

(13) शोभा यात्रा की दूरी यथासम्भव कम से कम रखी जाये।

(14) सभी साधर्मी भाई बहन कतारबद्ध एवं अनुशासित होकर चलें।

(15) रास्ते में कुछ भी खाने पीने का त्याग करें। यदि अनिवार्य हो तो रास्ते में मात्र शुद्ध जल की व्यवस्था की जाये।

(16) भोजन में कोई अभक्ष्य वस्तु का प्रयोग न किया जाए।

(17) भोजन राजसिक न होकर सात्विक और स्वादिष्ट तथा मौसम एवं स्वास्थ के अनुकूल हो।

(18) भोजन दिन में ही तैयार किया जाए तो एक अनुकरणीय आदर्श होगा।

(19) भोजन सामग्री का शोधन कर लिया जाए।

(20) अतिथियों के बैठने की समुचित व्यवस्था की जाए।

(21) शुद्ध एवं मर्यादित सामग्री वाले भोजनालय में अनाधिकृत व्यक्ति न जायें।

(22) भोजन बनाने हेतु छने जल के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाए।

(23) स्वल्पाहार ग्रहों के संचालकों को भी अभक्ष्य पदार्थों का उपयोग न करने तथा छने जल का उपयोग करने में विशेष निर्देश दिये जायें।

आशा है सभी सम्बन्धित लोग इन सुझावों पर गम्भीरता से विचार करके सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज को आदर्श महोत्सव के आयोजन हेतु प्रेरित करेंगे। ●

पंचकल्याणक

इस संसार को पंच प्रकार के संकटों-अकल्याणों की आश्रय-भूमि माना गया है। उनको द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव तथा भावरूप पंच परावर्तन कहते हैं। तीर्थंकर भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान तथा मोक्ष का स्वरूप चिंतवन करने वाले सत्पुरुष को उक्त पंच परावर्तनरूप संसार में परिभ्रमण का कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। उनके पुण्य जीवन के प्रसाद से पंच प्रकार के अकल्याण छूट जाते हैं तथा यह जीव मोक्षरूप पंचमगति को प्राप्त करता है। पंच अकल्याणों की प्रतिपक्ष रूप तीर्थंकर के जीवन की गर्भ, जन्मादि पंच अवस्थाओं की पंचकल्याण या पंचकल्याणक नाम से प्रसिद्धि है।

विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों के अवसरों पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा दिये गये प्रासंगिक प्रवचनों में से संकलित महत्वपूर्ण अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए श्रावक को आज्ञा

यह भगवान की प्रतिष्ठा का महोत्सव चल रहा है। भगवान ने आत्मा का जैसा स्वरूप बताया है, वैसा जानना और मानना ही सच्चा महोत्सव है।

वसुनन्दि प्रतिष्ठा पाठ में जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा कराने वाले श्रावक का वर्णन आता है। वह श्रावक श्रीगुरु के पास जाकर आज्ञा माँगता है कि –

''हे स्वामी ! मैं इस लक्ष्मी को कुलटा स्त्री के समान और अनित्य जानता हूँ, इसलिए अब इसके प्रति राग घटाकर इसका सदुपयोग करूँ – ऐसा कोई कार्य बताइये। मेरी भावना श्री अरहन्त भगवान के पंचकल्याणक करने की है।''

तब श्रीगुरु कहते हैं कि ''हे भव्य ! तू धन्य है, तू अपने कुल में सूर्य के समान है।''

ऐसा कहकर वे जिनबिम्ब प्रतिष्ठा और पंचकल्याणक महोत्सव की आज्ञा देते हैं।

यह महोत्सव अनन्त भवों का नाश करने वाला है। यहाँ मात्र बाह्य-क्रिया और शुभ राग की बात नहीं है; परन्तु अपने ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव के भानपूर्वक उसमें लीन होने पर तृष्णा घटने से अनन्त अवतार का नाश हो जाता है – यह बात कही जा रही है। परमार्थ से आत्मा के स्वभाव की अनन्त ज्ञानमय सम्पत्ति प्रकट करके राग का व्यय करना ही सच्चा महोत्सव है। महोत्सव कराने वाला अपना राग घटाने के लिए अपनी सम्पत्ति का व्यय करता है। वास्तव में आत्मा लक्ष्मी का व्यय नहीं कर सकता; परन्तु राग घटाने का उपदेश देने के लिए व्यवहार से लक्ष्मी का व्यय करने की बात कही जाती है।

गर्भकल्याणक महोत्सव

श्री तीर्थंकर भगवान के आत्मा को पूर्वभव में आत्मभानसहित शुभ विकल्प उठने पर तीर्थंकर नामकर्म बँधता है। तीर्थंकर होने वाले विशिष्ट जीवों को ही वह प्रकृति बँधती है। अन्य जीवों को भी सोलहकारण भावना आदि का शुभराग होता है; परन्तु उन्हें वह (तीर्थंकर नामकर्म) प्रकृति नहीं बँधती।

माता के गर्भ में तीर्थंकर भगवान के आत्मा के आने के छह माह पहले से

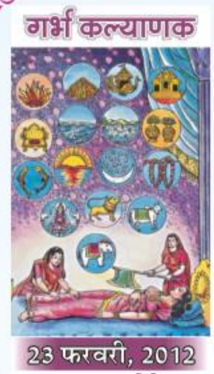

फाल्गुन शुक्ल द्वितिया

देवता, माता की सेवा करने के लिए आते हैं और कहते हैं कि **''अहो रत्नकूखधारिणी माता ! आप धन्य हैं; छह माह पश्चात् आपकी कोख में जगत के उद्धारक त्रिलोकनाथ तीर्थंकरदेव आने वाले हैं। आप न केवल भगवान की माता हो, बल्कि सारे जगत की माता हो।''** इत्यादि अनेक प्रकार से वे माता की भक्ति करते हैं और उनके घर पर सदा रत्नवर्षा करते हैं।

छह माह बाद माता को सोलह-स्वप्न आते हैं और उनके गर्भ में भगवान का जीव आता है। यहाँ पंचकल्याणक महोत्सव में ऐसा गर्भकल्याणक प्रसंग आज बताया गया है। **माता के गर्भ में भगवान का आत्मा, सम्यग्दर्शन और सम्यक्मति-श्रुत-अवधिज्ञान सहित ही आता है।**

देखो ! इस प्रतिष्ठा महोत्सव में यदि आत्मा के स्वभाव को समझे तो आत्मा में धर्म की प्रतिष्ठा होगी। यह जिनमन्दिर, प्रतिमा आदि बाह्य-संयोग तो जिस समय जो होने वाला हो, उस समय वह अपने कारण से स्वयं होता है। रागी जीव को उसके अपने कारण से राग होता है; परन्तु उस शुभभाव का कारण बाहर का संयोग नहीं होता और बाहर का संयोग होना था, इसलिए जीव को शुभराग हुआ – ऐसा भी नहीं है। बाह्य-संयोग स्वयं हो तो शुभभाव वाले जीव को निमित्त कहा जाता है। उस बाह्य-क्रिया से तो धर्म नहीं है; परन्तु शुभभाव से भी धर्म नहीं है। आत्मा अपने स्वभाव से शुभराग का भी कर्ता नहीं है तो फिर आत्मा बाह्य-जड़ पदार्थों की क्रिया करे – यह बात कहाँ रही ?

वीतरागी भगवान की प्रतिष्ठा का विकल्प तो ज्ञानी-अज्ञानी दोनों को होता है; परन्तु मैं बाहर की क्रिया करता हूँ – ऐसी विपरीत मान्यतावाला अज्ञानी जीव उस शुभभाव के समय मिथ्यात्व सहित पुण्य बाँधता है और धर्मी ज्ञानी जीव को उस शुभभाव के समय आत्मभान होने से उसकी श्रद्धा के बल से शुद्धात्मा की ओर झुकाव होने से धर्म होता है। इसप्रकार धर्म का आधार तो आत्मा ही है, जबकि

को सचित्त मानते हैं; अतः फूलों का उपयोग नहीं करते, तो वे बहुत प्रभावित हुईं और उन्होंने अपने भाषण में इस बात का उल्लेख करते हुए बारंबार यह बात दुहराई कि जैनधर्म इतनी सूक्ष्म हिंसा से भी बचता है, ऐसी सूक्ष्म हिंसा को भी अवाइड करता है। हम मनों फूल शादी-ब्याहों में बर्बाद करते हैं, पैरों से कुचलते हैं, जो नहीं करना चाहिए।

जैनदर्शन केवल नर से नारायण, भक्त से भगवान बनाने वाला दर्शन नहीं है; बल्कि पशु से परमात्मा बनाने वाला दर्शन है। इस पंचकल्याणक में आगम के अनुकूल तत्त्वज्ञानपरक, वैराग्यवर्द्धक प्रवचनों एवं प्रदर्शनों की मुख्यता रहेगी, फिर भी ऐसा प्रयत्न रहेगा कि सभी कार्यक्रम चित्ताकर्षक हों। एतदर्थ वे सभी साधन जुटाने का प्रयत्न रहेगा जो सबको पसंद आयें और सभी कुछ न कुछ नया ग्रहण करके जायें तथा युगों तक इसे याद करते रहें।

कुछ लोग इस विचारधारा के हैं कि मन्दिर और मूर्तियाँ बहुत हो चुकी हैं अब नये मन्दिरों और आये दिन होने वाले पंचकल्याणकों पर रोक लगनी चाहिए।

उनसे हमारा विनम्र निवेदन यह है कि उन्हें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि वर्तमान में नित्य नई-नई कालोनियाँ बन रही हैं, जैन भी देहातों से शहर की ओर आ रहे हैं। यदि वहाँ नवीन कालोनियों में मन्दिर नहीं बनेंगे तो आज के व्यक्ति बिना दर्शन-पूजन के ही रह जायेंगे। मूर्तियाँ भी एक से एक बढ़कर बन रही हैं। कोई प्राचीन मूर्तियों से संतुष्ट नहीं होते। प्राचीन रख लेंगे; परन्तु साथ ही नवीन वेदी व नवीन मूर्ति भी हर एक को चाहिए। ऐसी स्थिति में वे कोरे आदर्श काम नहीं आयेंगे।

अतः युग की आवश्यकता का अनुभव करते हुए जहाँ आवश्यकता है, वहाँ तो मन्दिर बनेंगे मूर्तियाँ भी बनना ही चाहिए। हाँ, जहाँ पहले से ही अनेक मन्दिर हैं, वहाँ नवीन मन्दिर बनाना उचित नहीं है। ●

'महिमा हजार दस सामान्य जु केवली की,
ताके सम तीर्थंकरदेवजी की मानिये।
तीर्थंकरदेव मिलें दसक हजार ऐसी,
महिमा महत एक प्रतिमा की जानिये।।'
(अध्यात्म पंच संग्रह, उपदेश सिद्धांतरत्न, श्लोक 60)

आदर्श पंचकल्याणक

– अभयकुमार जैन, देवलाली

नवीन जिन-बिम्बों की विधि-पूर्वक प्रतिष्ठा करने हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों के आयोजन की परम्परा दिगम्बर जैन समाज में सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी द्वारा प्ररूपित तत्त्वज्ञान से अनुप्राणित होकर हमारे सभी धार्मिक अनुष्ठान जीवन्त और सार्थक होकर आदर्शरूप ग्रहण करते जा रहे हैं। पूजा-पाठ में अध्यात्म रस का परिपाक, शोभायात्राओं में भी आध्यात्मिक गीतों की गूँज, इन्द्रसभा आदि मंच के कार्यक्रमों में भी अध्यात्म की चर्चा आदि अनेक रूपों में मुमुक्षु समाज द्वारा आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव आदर्श कहे जा सकते हैं।

इसी शृंखला में दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 तक जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आदर्श और भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हो रहा है। नवम्बर 2012 में तीर्थराज सम्मेदशिखर पर भी मुमुक्षु समाज द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन घोषित हो चुका है।

जयपुर में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव को भव्य और आदर्श घोषित करने का अभिप्राय मात्र इतना ही है कि मुमुक्षु समाज द्वारा अब तक आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सवों के आदर्शरूप में जो कुछ विकृतियाँ आ गई हैं; जो कुछ भी थोड़ी बहुत कमी रह जाती है; उन्हें दूर करके इस महोत्सव को अधिकतम आदर्श रूप देने के प्रयास किये जायें, ताकि भविष्य के लिए भी आदर्श परम्परा स्थापित की जा सके। यदि कदाचित् इनमें भी कोई कमी रह जाये तो उसे आगामी महोत्सवों में दूर करने के प्रयास किये जायें।

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आदर्श महोत्सव किसे कहा जाये? हो सकता है कि कोई कार्य हमें आदर्श लगे; परन्तु वही कार्य अन्य लोगों को उचित न लगे। अतः आदर्श रूप की ऐसी परिभाषा सुनिश्चित होना चाहिए जो सबको नहीं तो अधिकतम लोगों को स्वीकार्य हो।

इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए कि महोत्सव का हर अंग देव-शास्त्र-गुरु

लोग बाह्य क्रिया के आधार से धर्म मानकर भटक रहे हैं। भगवान तो माता के गर्भ में अवतार लेते समय भी चैतन्य स्वरूप शुद्धात्मा के भानसहित थे।

जन्म कल्याणक महोत्सव

तीर्थंकरदेवों का जन्म शुद्धात्मा के भानसहित ही होता है। देव और देवियाँ उनकी सेवा करती हैं, रत्नों की वर्षा होती है, इन्द्र आकर जन्मकल्याणक महोत्सव मनाते हैं – यह तो सब पुण्य का प्रभाव है; परन्तु ऐसा **पुण्य किसे बँधता है ? जिसे आत्मा का भान हो और पुण्य की भावना न हो, उसे ही ऐसा पुण्य बँध जाता है।** यद्यपि तीर्थंकर प्रकृतिवाला कर्म बँधना भी धर्म का फल नहीं है, तथापि वह प्रकृति या कर्म धर्मात्मा की भूमिका में अर्थात् आत्मज्ञान होने के बाद ही बँधता है।

जन्म कल्याणक

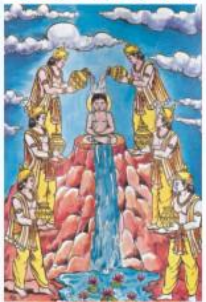

24 फरवरी, 2012

फाल्गुन शुक्ल तृतीया

आज यहाँ भगवान के जन्मकल्याणक महोत्सव का दृश्य दिखाया गया है। यहाँ तो उपचार से निक्षेप करके कल्याणक दिखाये जाते हैं। **साक्षात् भगवान के कल्याणक तो कोई भाग्यशाली ही देखता है। वास्तव में जो चैतन्यभगवान के भानसहित पंचकल्याणक देखता है, उसने ही भगवान के पंचकल्याणक साक्षात् देखे** – ऐसा कहा जाता है। दूसरे लोगों ने भगवान के शरीर को ही देखा है; परन्तु सच्चे भगवान को तो उन्होंने देखा ही नहीं है। **यहाँ पंचकल्याणक महोत्सव में भी आत्मा को समझने की ही मुख्यता है।** इस महोत्सव में गर्भ और जन्मकल्याणक महोत्सव के दृश्य दिखाये जा चुके हैं; अभी दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक आदि दृश्य भी दिखाये जायेंगे, वे सभी कार्यक्रम देखने योग्य हैं।

दीक्षाकल्याणक महोत्सव

आज भगवान का दीक्षाकल्याणक महोत्सव है। यहाँ स्थापना निक्षेप से तीर्थंकर भगवान का दीक्षा-कल्याणक मनाया जा रहा है। पूर्व में जो तीर्थंकर भगवान हो गये

तप कल्याणक

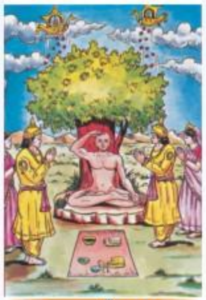

25 फरवरी, 2012

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

उन्हें वर्तमान ज्ञान में याद करके स्थापना की जाती है। वे तीर्थंकरदेव मति-श्रुत-अवधिज्ञान और क्षायिक सम्यग्दर्शन सहित जन्म लेते हैं। जब वे माता के पेट में आते हैं, तब भी उन्हें ज्ञानमूर्ति आत्मा का भान रहता है।

शरीर, मन और वाणी का एक रजकण भी मेरा नहीं है तथा जो क्षणिक शुभाशुभ भाव होते हैं, वे भी मेरी पुरुषार्थहीनता से होते हैं; परपदार्थों के कारण नहीं होते। वह विकार मेरा स्वरूप नहीं है, वह मेरे स्वभाव में से आता नहीं है। मैं तो अखण्ड ज्ञान और आनन्द का सागर हूँ – ऐसे भानसहित भगवान का आत्मा, स्वर्ग या नरक में से आता है। श्री ऋषभदेव भगवान पूर्वभव में सर्वार्थसिद्धि में देव थे, वहाँ से माता की कोख में तीन ज्ञान सहित आये थे।

अहो ! आज महा-वैराग्य का दिवस है, परम उदासीनता का प्रसंग है। आज भगवान वीतरागी चारित्रदशा धारण कर रहे हैं – ऐसी चारित्रदशा के बिना इस आत्मा की कभी मुक्ति नहीं हो सकती।

यहाँ तो भगवान की दीक्षा की स्थापना है; परन्तु ऐसे प्रसंग के समय स्वयं अन्तर में ऐसी भावना होती है कि ''मेरी ऐसी परम वीतरागी निर्ग्रन्थदशा कब होगी ? मैं मुनि होकर आत्मध्यान में लीन कब होऊँगा ? मैं इन वीतरागी सन्तों की पंक्ति में कब बैठूँगा ?'' परन्तु ऐसी भावना कौन करेगा ? जिसे आत्मा के रागरहित चिदानन्द स्वभाव का भान हो, उसे यथार्थ मुनिदशा की सच्ची पहचान होती है; अत: वही ऐसी यथार्थ भावना कर सकता है। यह मुनिदशा की स्थापना का निक्षेप है; परन्तु वह निक्षेप कौन करेगा ? स्थापना तो निमित्त है, पर है, व्यवहार है।

देखो ! इन्द्र भी जिनका जन्मोत्सव मनाते हैं; ऐसे भगवान को भी अन्तर में ऐसी चारित्रदशा प्रकट हुए बिना केवलज्ञान नहीं होता – ऐसा वस्तु का स्वभाव है। अन्तर में जैसा रागरहित स्वभाव है, वैसी रागरहित दशा आत्मा की हो और बाहर में जैसा माता ने जन्म दिया हो, वैसी शरीर की दशा स्वयं हो जाती है – ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक संबन्ध मुनिदशा में होता है। अन्तर में वीतरागभाव प्रकट हो गया

हो और बाह्य में बुद्धिपूर्वक वस्त्रादि का सम्बन्ध रहे – ऐसा तीनकाल तीनलोक में नहीं होता। भगवान ऐसी पवित्रदशा की भावना भाते थे और आज उन्होंने वह दशा अंगीकार की है।

केवलज्ञान कल्याणक

जिनके निमित्त से दिव्यध्वनि खिरे – ऐसे परमाणु सम्यग्दर्शन की भूमिका में बँधते हैं और केवलज्ञान की भूमिका में छूटते हैं। भगवान को पूर्व के तीसरे भव में दर्शनविशुद्धिपूर्वक ऐसा विकल्प हुआ कि ''अहो जगत के जीव आत्मा को समझकर यह धर्म प्राप्त करें!'' – ऐसे धर्मवृद्धि के विकल्प के निमित्त से तीर्थंकर नामकर्म के जड़ रजकण बँध गये और जब वह विकल्प टूटकर अभेद स्वभाव प्रकट हुआ, तब धर्मसभा में अभेद ऐसी ॐ ध्वनि छूटी। पहले धर्मवृद्धि के विकल्प से बँधी हुई वाणी, जगत के जीवों को धर्मवृद्धि का कारण होती है।

भगवान की वाणी को समझने वाला कौन कहा जायेगा कि जो भगवान के बताये हुए अभेद स्वभाव को ही आश्रय करने योग्य समझे, राग के एक अंश को भी आदरणीय न समझे; वही जीव भगवान की वाणी को समझने वाला कहलाता है।

भगवान अपने उपदेश में यही कहते हैं कि हे भव्यजीवों! तुम अपने ज्ञान में सर्वज्ञ का निर्णय करो। तुम्हारे आत्मा में भी सर्वज्ञस्वभाव भरा है, तुममें भगवान बनने की पूर्ण सामर्थ्य भरी है, उसकी श्रद्धा करके उसका सेवन करो तो परमात्मदशा प्रकट हो। जैसे मोर के अण्डे में ही सुन्दर रंग-बिरंगा मोर होने की सामर्थ्य है और उसी में से मोर होता है। उसी प्रकार प्रत्येक आत्मा में परमात्मा होने की सामर्थ्य है, उसका विश्वास करके उसमें एकाग्रता करने से परमात्मदशा प्रकट हो।

ज्ञान कल्याणक

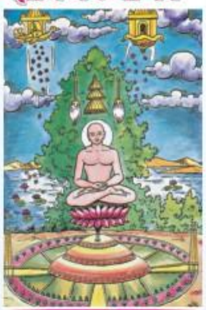

26 फरवरी, 2012
फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

भगवान की दिव्यध्वनि एकाक्षरी होती है। रागी और अल्पज्ञ जीव की वाणी भेदवाली होती है। वीतरागता और केवलज्ञान होने के बाद वाणी में भेद नहीं होता। केवली भगवान की वाणी में एक साथ पूरा रहस्य आता है और सुनने

वाले अपनी योग्यता के अनुसार समझते हैं। श्री गणधरदेव भगवान की वाणी झेलने के सर्वोत्कृष्ट पात्र हैं। भगवान की वाणी खिरते समय वे नियम से हाजिर होते हैं। भगवान की वाणी खिरे और उसे झेलने वाले गणधरदेव उपस्थित न हों – ऐसा कभी नहीं हो सकता। उपादान और निमित्त की सन्धि कभी नहीं टूटती।

जब तीर्थंकर भगवान की वाणी पहली बार छूटती है, तब उसे झेलकर गणधरदेव बारह अंग की रचना करते हैं। इतना उत्कृष्ट उनका क्षयोपशम होता है। भगवान की वाणी में से तो वे बहुत झेलते हैं, पर वे जितना झेलते हैं, उसका कुछ भाग ही बारह अंग की रचना में आता है। भगवान की सभा के वे सर्वोत्कृष्ट श्रोता हैं।

मोक्ष कल्याणक

'आत्मा में सिद्धत्व की स्थापना का महामहोत्सव'

आज तीर्थंकर अरहन्त भगवान की प्रतिष्ठा का मंगल दिवस है। इस प्रतिष्ठा-महोत्सव में आत्मा के स्वभाव की प्रतिष्ठा करने की बात है। इस जीव ने विकार को अपना मानकर अनादिकाल से अपने विकार की प्रतिष्ठा की है; परन्तु विकार से भिन्न चैतन्यस्वभाव को जानकर, अपने में सिद्ध समान चैतन्य-स्वभाव की प्रतिष्ठा करना धर्म है, इस तथ्य को अंतरंग से स्वीकार नहीं किया है।

'मैं विकार नहीं हूँ; मैं अखण्ड चैतन्यस्वभाव हूँ'– ऐसे भान द्वारा अरहन्त भगवान ने अपने आत्मा में चैतन्यस्वभाव की प्रतिष्ठा करके, उसमें लीन होकर राग-द्वेष का अभाव करके केवलज्ञान प्रकट किया; यह उन्हीं की स्थापना है। जो जीव अरहन्तों के समान अपने आत्मा में चैतन्य भगवान की प्रतिष्ठा करता है, वह भगवान हुए बिना नहीं रहता। अपने आत्मा में चैतन्यप्रभु की स्थापना करना ही परमार्थ स्थापना है; बाहर में भगवान की स्थापना तो उपचार से है।

पंचकल्याणक की बाह्य क्रियाएँ तो उनके स्वकाल में हुई हैं। देखो! यह चैतन्यप्रभु की लीला है कि वह स्व को जानते हुए पर को जान लेता है; परन्तु पर में कुछ करे – ऐसी उसकी लीला नहीं है।

इस स्वाध्याय मन्दिर में ग्रन्थाधिराज समयसार की प्रतिष्ठा हुई है, उसमें मंगलाचरण करते हुए श्री कुन्दकुन्द भगवान सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार करते हैं –

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवली भणिदं।।1।।

लोग बाह्य क्रिया के आधार से धर्म मानकर भटक रहे हैं। भगवान तो माता के गर्भ में अवतार लेते समय भी चैतन्य स्वरूप शुद्धात्मा के भानसहित थे।

जन्म कल्याणक महोत्सव

तीर्थंकरदेवों का जन्म शुद्धात्मा के भानसहित ही होता है। देव और देवियाँ उनकी सेवा करती हैं, रत्नों की वर्षा होती है, इन्द्र आकर जन्मकल्याणक महोत्सव मनाते हैं – यह तो सब पुण्य का प्रभाव है; परन्तु ऐसा **पुण्य किसे बँधता है ? जिसे आत्मा का भान हो और पुण्य की भावना न हो, उसे ही ऐसा पुण्य बँध जाता है।** यद्यपि तीर्थंकर प्रकृतिवाला कर्म बँधना भी धर्म का फल नहीं है, तथापि वह प्रकृति या कर्म धर्मात्मा की भूमिका में अर्थात् आत्मज्ञान होने के बाद ही बँधता है।

जन्म कल्याणक

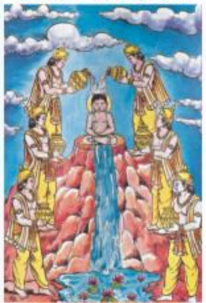

24 फरवरी, 2012

फाल्गुन शुक्ल तृतीया

आज यहाँ भगवान के जन्मकल्याणक महोत्सव का दृश्य दिखाया गया है। यहाँ तो उपचार से निक्षेप करके कल्याणक दिखाये जाते हैं। **साक्षात् भगवान के कल्याणक तो कोई भाग्यशाली ही देखता है। वास्तव में जो चैतन्यभगवान के भानसहित पंचकल्याणक देखता है, उसने ही भगवान के पंचकल्याणक साक्षात् देखे** – ऐसा कहा जाता है। दूसरे लोगों ने भगवान के शरीर को ही देखा है; परन्तु सच्चे भगवान को तो उन्होंने देखा ही नहीं है। **यहाँ पंचकल्याणक महोत्सव में भी आत्मा को समझने की ही मुख्यता है।** इस महोत्सव में गर्भ और जन्मकल्याणक महोत्सव के दृश्य दिखाये जा चुके हैं; अभी दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक आदि दृश्य भी दिखाये जायेंगे, वे सभी कार्यक्रम देखने योग्य हैं।

दीक्षाकल्याणक महोत्सव

आज भगवान का दीक्षाकल्याणक महोत्सव है। यहाँ स्थापना निक्षेप से तीर्थंकर भगवान का दीक्षा-कल्याणक मनाया जा रहा है। पूर्व में जो तीर्थंकर भगवान हो गये,

तप कल्याणक

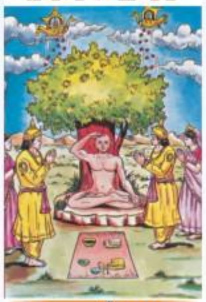

25 फरवरी, 2012

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

उन्हें वर्तमान ज्ञान में याद करके स्थापना की जाती है। वे तीर्थंकरदेव मति-श्रुत-अवधिज्ञान और क्षायिक सम्यग्दर्शन सहित जन्म लेते हैं। जब वे माता के पेट में आते हैं, तब भी उन्हें ज्ञानमूर्ति आत्मा का भान रहता है।

शरीर, मन और वाणी का एक रजकण भी मेरा नहीं है तथा जो क्षणिक शुभाशुभ भाव होते हैं, वे भी मेरी पुरुषार्थहीनता से होते हैं; परपदार्थों के कारण नहीं होते। वह विकार मेरा स्वरूप नहीं है, वह मेरे स्वभाव में से आता नहीं है। मैं तो अखण्ड ज्ञान और आनन्द का सागर हूँ – ऐसे भानसहित भगवान का आत्मा, स्वर्ग या नरक में से आता है। श्री ऋषभदेव भगवान पूर्वभव में सर्वार्थसिद्धि में देव थे, वहाँ से माता की कोख में तीन ज्ञान सहित आये थे।

अहो ! आज महा-वैराग्य का दिवस है, परम उदासीनता का प्रसंग है। आज भगवान वीतरागी चारित्रदशा धारण कर रहे हैं – ऐसी चारित्रदशा के बिना इस आत्मा की कभी मुक्ति नहीं हो सकती।

यहाँ तो भगवान की दीक्षा की स्थापना है; परन्तु ऐसे प्रसंग के समय स्वयं अन्तर में ऐसी भावना होती है कि ''मेरी ऐसी परम वीतरागी निर्ग्रन्थदशा कब होगी ? मैं मुनि होकर आत्मध्यान में लीन कब होऊँगा ? मैं इन वीतरागी सन्तों की पंक्ति में कब बैठूँगा ?'' परन्तु ऐसी भावना कौन करेगा ? जिसे आत्मा के रागरहित चिदानन्द स्वभाव का भान हो, उसे यथार्थ मुनिदशा की सच्ची पहचान होती है; अत: वही ऐसी यथार्थ भावना कर सकता है। यह मुनिदशा की स्थापना का निक्षेप है; परन्तु वह निक्षेप कौन करेगा ? स्थापना तो निमित्त है, पर है, व्यवहार है।

देखो ! इन्द्र भी जिनका जन्मोत्सव मनाते हैं; ऐसे भगवान को भी अन्तर में ऐसी चारित्रदशा प्रकट हुए बिना केवलज्ञान नहीं होता – ऐसा वस्तु का स्वभाव है। अन्तर में जैसा रागरहित स्वभाव है, वैसी रागरहित दशा आत्मा की हो और बाहर में जैसा माता ने जन्म दिया हो, वैसी शरीर की दशा स्वयं हो जाती है – ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक संबन्ध मुनिदशा में होता है। अन्तर में वीतरागभाव प्रकट हो गया

ध्रुव अचल अनुपम सिद्ध की कर वंदना मैं स्व-परहित ।
यह समयप्राभृत कह रहा श्रुतकेवली द्वारा कथित ।।1 ।।

यहाँ समयसार के प्रारम्भ में ही आचार्य भगवान अन्तर में सिद्धत्व का वैभव परोसते हैं; आत्मा में सिद्ध भगवान की स्थापना करते हैं – यही समयसार की सच्ची प्रतिष्ठा है । समयसार अर्थात् शुद्ध आत्मा । 'मैं राग हूँ'– ऐसी मिथ्या-मान्यता छोड़कर, **'मैं सिद्ध समान शुद्धात्मा हूँ'** – ऐसी प्रतीति करके अपने में शुद्धात्मा की स्थापना करना ही समयसार की सच्ची प्रतिष्ठा है ।

इस गाथा में आचार्यदेव कहते हैं कि **'हे जीवों ! मैं सिद्ध हूँ और तुम भी सिद्ध हो, तुम्हारे आत्मा में सिद्धपना समा जाए – ऐसी ताकत है । जो ज्ञान, सिद्धों को जानकर अपने में सिद्धपने की स्थापना करता है, उस ज्ञान में सिद्ध जैसी सामर्थ्य है । वह राग या अपूर्णता का आदर नहीं करता तथा अपने को पर का कर्ता और पर को अपना कर्ता नहीं मानता, अपितु अपने स्वभाव में ढलकर अनुक्रम से सिद्धदशा प्रकट करके भव-भ्रमण का नाश कर देता है ।'**

इस काल में भरतक्षेत्र के जीवों को साक्षात् सिद्धदशा नहीं है; परन्तु किसी महाभाग्यवन्त मुनि को चारित्रदशा प्रकट होती है तथा **'मैं सिद्ध हूँ, मैं सिद्ध हूँ'**– इस प्रकार सिद्धत्व का ध्यान करके वे दो-तीन भव में मुक्ति प्राप्त करते हैं । सम्यग्दृष्टि गृहस्थ भी अपने आत्मा में सिद्धत्व की स्थापना करके दो-तीन भव में मोक्षगामी हो जाते हैं । आचार्यदेव तो सभी आत्माओं को सिद्धपने ही देखते हैं क्योंकि स्वयं को सिद्धत्व की रुचि है और अल्पकाल में सिद्ध होना है ।

मोक्ष कल्याणक

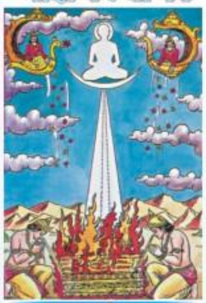

27 फरवरी, 2012
फाल्गुन शुक्ल पंचमी

यहाँ यह बताया जा रहा है कि **भगवान ने क्या करके मोक्ष प्राप्त किया ? भगवान ने परजीवों का कुछ नहीं किया; परन्तु सर्वप्रथम अपने आत्मा में भेदज्ञान प्रकट किया ।** यहाँ श्री समयसार में श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव भेदज्ञान को ही मोक्ष का उपाय बता रहे हैं –

णादूण आसवाणं असुचित्तं च विवरीय भावं च ।
दुक्खस्स कारणं ति य तदो णियत्तिं कुणदि जीवो ।।72 ।।
इन आस्रवों की अशुचिता विपरीतता को जानकर ।
आतम करे उनसे निवर्तन, दुःख कारण मानकर ।।72 ।।

आत्मा, नित्य ज्ञानानन्दस्वभावी पवित्र वस्तु है । उसकी अवस्था में जो शुभाशुभराग होता है, वह अशुचिरूप है । जैसे, पानी में उत्पन्न होनेवाली काई, पानी का स्वभाव नहीं है; उसका मैल है, वैसे ही आत्मा की अवस्था में होने वाले पुण्य-पापभाव आत्मा के स्वभाव नहीं हैं, बल्कि उसकी मलिनता है, अशुचिता है ।

आत्मा के ज्ञानस्वभाव का अनुभव करने पर वह पवित्र आत्मा अनुभव में आता है तथा पाप-पुण्य के भाव, आत्मा के मैलरूप से अनुभव में आते हैं । शरीर अशुचि है; परन्तु वह तो आत्मा से अत्यन्त भिन्न है, जड़ है । आत्मा की अवस्था में होनेवाला पुण्य-पापरूप राग भी अपवित्र है, मैल है, अशुचि है और ज्ञानानन्द की मूर्ति भगवान आत्मा पवित्र है, निर्मल है, शुचि है । इसप्रकार आत्मा और विकार को भिन्न-भिन्न जानकर, आत्मा विकार से पीछे हटकर स्वभाव की तरफ झुकता है । विकार से निवृत्त होने पर आत्मा को कर्मबन्धन नहीं होता । इसप्रकार **आत्मा और विकार का भेदज्ञान ही मुक्ति का उपाय है । भगवान ने ऐसा ही स्व-पर का भेदज्ञान करके निर्वाण प्राप्त किया है और इसलिए आज हम उनका पंचकल्याणक मना रहे हैं ।**

जहाँ जिसकी रुचि हो, वहाँ वह भेद नहीं करता; परन्तु अखण्ड मानता है । जिस प्रकार किसी व्यक्ति के पास एक लाख की सम्पत्ति हो और उसके चार बेटे हों तो प्रत्येक बेटा ऐसा अनुभव करता है कि हमारे पास एक लाख की सम्पत्ति है; उसीप्रकार जिसे पूर्णस्वभाव की रुचि है, वह अपने को पूर्ण अनुभव करता है; भेद नहीं करता ।

जिसप्रकार कुँवारी कन्या की सगाई होते ही उसका अभिप्राय पलट जाता है और जहाँ उसकी सगाई हुई है, वह उस घर को और उस वर को अपना मानती है तथा वर्तमान घर को अपना नहीं मानती; उसीप्रकार धर्मी जीव ने जब अन्तर स्वभाव के साथ सगाई की, तब तत्काल उसकी रुचि अर्थात् उसमें अपनापन होते ही संयोगों की तथा राग की रुचि टल जाती है । राग और संयोग होने पर भी 'वे मेरे नहीं हैं; मैं सिद्ध समान शुद्धात्मा हूँ' – इसप्रकार उसकी दृष्टि पलट जाती है । ऐसी पहचान और प्रतीति करना – यही सिद्धि का पन्थ है । इसके सिवाय और किसी उपाय से भव का अन्त नहीं आ सकता । **– पंचकल्याणक महामहोत्सव प्रवचन**

परमात्मा बनने की योग्यता वाला आत्मा

– आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 21 फरवरी से 27 फरवरी 2012 तक सम्पन्न होने वाले पंचकल्याणक का निमंत्रण देने जब हम सोनगढ से राजकोट पहुँचे; तब हमारा आदरणीय विद्वद्वर्य स्वर्गीय श्री खीमचंदभाई जेठालाल शेठ के सुपुत्र भरतभाई के यहाँ भोजन के लिये जाना हुआ; तब वहाँ भरतभाई के सुपुत्र श्री जिग्नेश शेठ ने हमें समयसार सिद्धि : भाग 7 के कुछ पृष्ठ दिखाये, जिनमें समयसार नामक ग्रन्थाधिराज की गाथा 330 व 331 पर प्रवचन करते हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी डॉ. हुकमचंद भारिल्ल कृत 'दशलक्षणधर्म' नामक पुस्तक में समागत विनय नामक तप की चर्चा करते हुए कहते हैं –

''विनय तप की व्याख्या पण्डित हुकमचंद ने बहुत अच्छी की है। बात सच्ची है। पर की विनय करना विनय तप नहीं है। अन्तर में प्रगट होने वाले दर्शन, ज्ञान और चारित्र के प्रति बहुमान का भाव ही विनय तप है; क्योंकि तप तो शुद्धोपयोगरूप होता है, इच्छानिरोध रूप होता है।

डॉ. भारिल्ल ने विनय के तीन प्रकार लिये हैं। बहुत विस्तार से समझाया है। **उनके इस कार्य का चौंतीस पण्डितों ने बखान (प्रशंसा) किया है।**

तीन प्रकार में एक विनय तप, एक विनय पुण्य और एक विनय पाप अनंत संसार का कारण मिथ्यात्व। अंतरंग इच्छा निरोध होकर वीतरागता बढकर शुद्धोपयोग का बढना निश्चय विनय तप है। तीर्थंकर पुण्य प्रकृति के बंध की कारणरूप विनयसंपन्नता भावना पुण्यरूप विनय है। अनंत संसार का कारणरूप विनय मिथ्यात्व सबसे बड़ा पाप है।

उन्होंने अनेक शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है। अध्ययन करके चारों ओर से अच्छी तरह सुमेल करके यह धर्म के दशलक्षण पुस्तक स्वयं ही बनाई है। ऐसे अनेक बोल लिये हैं। अनशन की अपेक्षा अवमौदर्य – ऐसे आगे-आगे के तप बड़े तप हैं। अनशन, ऊनोदर से रसपरित्याग बड़ा तप है। अनेक विशेषताओं का स्पष्टीकरण किया है। **उन्होंने अपने अंदर से यह सब लिखा है।**

अपने भगवान आत्मा का दर्शन, ज्ञान और आचरण का विशेष बहुमान ही इच्छा निरोधरूप विनय तप है। शास्त्रों में उपचार विनय की भी चर्चा है; कुछ लोग उपचार विनय में दूसरों की विनय करने की बात कहते हैं; पर यहाँ उसका भी निषेध किया है। यह बात सच्ची है। सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की विनय ही उपचार है; क्योंकि वे भी परद्रव्य ही हैं। बहुत अच्छी तरह बात स्पष्ट की है। **वैसे तो प्रत्येक तप की व्याख्या बहुत अच्छी की है।**[1]

विनय तप की व्याख्या में लिखा है कि यह माथा कोई सड़ा नारियल नहीं है; जो चाहे जहाँ नम जाये। जहाँ धर्मदृष्टि दिखे, धर्म दिखे; वहाँ ही नमना भी उपचार विनय है; क्योंकि यह विनय विकल्प रूप है।

उन्होंने शास्त्रों का अध्ययन बहुत बहुत किया है। उसमें से निकाल कर बहुत सरस बात लिखी है। गजब की पुस्तक है। हम तो भाई ! जो जैसा है, वैसा कह देते हैं। ये पण्डित हुकमचंद परमात्मा बनने की योग्यता वाला आत्मा है। केवलज्ञान प्राप्त करे – इसकी ऐसी योग्यता है। ऐसी साधारण बातों में तो इसका कहना ही क्या है ?

बीच में एक मुमुक्षु भाई कहता है कि यह सब आपका प्रताप है।

उसे बीच में टोकते हुए गुरुदेवश्री कहते हैं कि **नहीं, ऐसी बात नहीं है। उसका स्वयं का क्षयोपशम है।** बात तो ऐसी ही लिखी है कि मैंने सबकुछ यहाँ से ही सीखा है। यहाँ आता है तो भी ऐसी ही बात करता है; **पर इतना अधिक विस्तार यहाँ (हमारे प्रवचन में) कभी नहीं आया।**

पण्डितजी **अपने स्वाध्याय में सभी शास्त्र आद्योपान्त पढते हैं, इसमें से उनके मगज में सार रह जाता है। उसके दम पर यह सब कुछ निकाला है। बड़े-बड़े करणानुयोग, चरणानुयोग के ग्रंथ; दार्शनिक ग्रंथ, सैद्धांतिक ग्रन्थों के वाचन में आगे-पीछे क्या है – यह सब ख्याल में रखकर विचार करते हैं; तब ऐसी बातें आयी हैं।** अरे भाई ! **ऐसे लोग पण्डित कहे जाते हैं।**[2]

पण्डित हुकमचंद ने विनय तप में यह न्याय प्रस्तुत किया है कि शुद्धोपयोग ही निश्चय विनय है, पर की विनय तो औपचारिक है, विकथा है। बात सच्ची है, उनकी यह बात सच्ची बात है। एक जगह तो लिखा है कि कानजी स्वामी ने जो गहरी-गहरी बातें प्रस्तुत की हैं – यह इसकी एक कड़ी है – ऐसा लिखा है।

ये गंभीर विचारक हैं, क्षयोपशम बहुत है, 34 पण्डितों ने प्रशंसा की है – ऐसी बात है। **ऐसी बात आज तक कही नहीं थी।** इतना सब कुछ होने पर भी वे बहुत निर्मानी मनुष्य हैं। वे तो यही कहते हैं कि मैंने सब कुछ यही से सीखा है; पर...।''[3]

– पीयूष जैन

मैनेजर – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

---

1. समयसार सिद्धि – भाग 7, पृष्ठ 505, गाथा 230
2. समयसार सिद्धि – भाग 7, पृष्ठ 508, गाथा 231
3. समयसार सिद्धि – भाग 7 (गुजराती), पृष्ठ 510

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

काटोल (नागपुर) : यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगंबर जिनमंदिर एवं श्री कुंदकुंद कहान स्वाध्याय भवन में भगवान महावीर, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान सीमंधरस्वामी के वीतरागी दिगंबर जिनबिम्ब विराजमान करने हेतु दिनांक 24 से 26 दिसम्बर 2011 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ। महोत्सव के संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री व पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल के नेतृत्व व निर्देशन में संपन्न हुए।

इस अवसर पर पण्डित उत्तमचंदजी जैन छिंदवाडा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित दिनेशभाई शहा मुंबई, सौ. उज्ज्वला शहा मुंबई आदि विद्वानों के मार्मिक प्रवचनों का धर्मलाभ उपस्थित श्रोताओं को मिला।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इंदौर, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इंदौर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ आदि विद्वानों की सहायता से संपन्न हुआ।

– श्रुतेश सातपुते शास्त्री

बाहुबलि विधान संपन्न

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ दिनांक 8 जनवरी 2012 को श्री अजितजी जैन बड़ौदा परिवार की ओर से उन्हीं के निवास स्थान पर बाहुबली विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अहमदाबाद, दाहोद एवं बड़ौदा के अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में श्री प्रफुल्लभाई डी.राजा नैरोबी भी उपस्थित थे। विधान के कार्य ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित सुमितजी शास्त्री जयपुर, पण्डित दीपकजी कोटडिया ने संपन्न कराये।

ज्ञातव्य है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन की छत पर भगवान बाहुबली की 91 इंची श्वेत पाषाण की खड्गासन प्रतिमा श्री अजितजी जैन बड़ौदा परिवार की ओर से ही विराजमान होनी है, इसी के अन्तर्गत बहुमान एवं भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अपने यहाँ भगवान बाहुबली विधान का आयोजन किया। अन्त में सभी साधर्मियों को भगवान बाहुबली का स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप दिया गया।

आध्यात्मिक युवा शिविर संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ मण्डी स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिन मंदिर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, उदयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 25 दिसम्बर 2011 से 1 जनवरी 2012 तक आध्यात्मिक युवा शिविर अत्यंत सफलता के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनों एवं पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में जिनदर्शन, सात तत्त्व, द्रव्यगुणपर्याय, चार अभाव, सदाचार, क्रमबद्धपर्याय आदि विषयों का प्रारम्भिक ज्ञान कराया गया।

– लक्ष्मीमल बण्डी, कमल गदिया

प्रतिमा विराजमानकर्ता

21 इंची स्फटिक रत्न के श्री चन्द्रप्रभ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्ता
श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन परिवार, राजपुर रोड़, दिल्ली

सम्मेदशिखर पर 91 इंची खड़गासन श्री पार्श्वनाथ भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्री भगवानजी भाई कचराभाई शाह परिवार, लन्दन

कैलाश पर्वत पर 91 इंची खड़गासन श्री बाहुबली भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्री अजितकुमारजी जैन परिवार, बड़ौदा

पूर्व दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री नेमिनाथ भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्रीमती भारती बेन विपिनभाई भायाणी परिवार, शिकागो (यू.एस.ए.)

पश्चिम दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री नेमिनाथ भगवान के भेंटकर्ता
श्री विवेक जैन, इन्दौर (मस्कट)

पश्चिम दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री नेमिनाथ भगवान के विराजमानकर्ता

उत्तर दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री नेमिनाथ भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्री अक्षयभाई दोशी परिवार, मुम्बई

दक्षिण दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री नेमिनाथ भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता

पूर्व दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री वासुपूज्य भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता

पश्चिम दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री वासुपूज्य भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता

उत्तर दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री वासुपूज्य भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्री अनन्तभाई ए.सेठ एवं शारदाबेन शान्तिलाल शाह परिवार, मुम्बई

दक्षिण दिशा में 51 इंची खड्गासन श्री वासुपूज्य भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री सीमंधर भगवान के भेंट एवंविराजमानकर्ता
श्री प्रमोद उषा शाह परिवार, शिकागो

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री युगमंधर भगवान के भेंटकर्ता
श्री दिनेशभाई मोदी, जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल फैडरेशन, मुम्बई

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री युगमंधर भगवान के विराजमानकर्ता
श्रीमती अनीषा विनय छड़वा, मुम्बई

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री बाहु भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्ता
श्री संजय कोठारी परिवार, मुम्बई

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री सुबाहु भगवान के भेंटकर्ता
श्री डॉ. अशोक जैन एवं श्रीमती ऋतु जैन परिवार, इन्दौर

पावापुरी की रचना पर 21 इंची पद्मासन श्री सुबाहु भगवान के विराजमानकर्ता
श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार, कोटा

विधिनायक श्री आदिनाथ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्ता
श्रीमान अमृतभाई मेहता सतीशभाई मेहता परिवार, अहमदाबाद

रत्नमयी लालवर्णी 9 इंची श्री पद्मप्रभ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्ता
श्री महेन्द्रकुमार, राहुल, विनीत एवं धार्मिक गंगवाल परिवार, जयपुर

रत्नमयी हरितवर्णी 9 इंची श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के भेंटकर्ता एवं विराजमानकर्ता
पण्डित शिखरचन्द जैन संजयकुमार जैन परिवार, विदिशा

राजा-रानी

1. माता-पिता — श्रीमती सुशीला एवं श्री शान्तिलालजी जैन, अलवरवाले, जयपुर
2. यज्ञ नायक — श्री अनन्तभाई सेठ एवं श्रीमती कनकबेन ए. सेठ, मुम्बई
3. महामंत्री — श्री विपिनचंद शास्त्री, मुम्बई

राजसभा के सदस्य राजागण

1. श्री ब्रजलालजी जैन, ग्रान्ट रोड़, मुम्बई
2. श्री समकित पहाड़िया एवं मंजु पहाड़िया, किशनगढ़
3. श्री दिनकर भाई शाह एवं श्रीमती सुनीता शाह, लन्दन
4. श्री के.एल. जैन एवं श्रीमती शकुन्तला जैन, जयपुर
5. श्री मोहित बड़कुल एवं श्रीमती शिल्पा बड़कुल, भोपाल
6. श्री रमणलाल नेमचन्द शाह, मलाड़ (ईस्ट), मुम्बई
7. श्री पद्मचन्द जैन एवं श्रीमती विजया जैन, कोटा
8. श्री सौरभ जैन एवं श्रीमती श्वेता जैन इन्दौर तथा श्री गौरव जैन एवं श्रीमती श्रद्धा जैन
9. श्री पद्मचंद शाह एवं श्रीमती शैलवाला शाह, जयपुर
10. श्री नरेश जैन एवं श्रीमती ज्योति जैन, श्योपुर
11. श्री राकेश जैन एवं श्रीमती अनिता जैन तथा मुकेश जैन एवं श्रीमती ऋतु जैन, इन्दौर
12. श्री नरेन्द्र बड़जात्या एवं श्रीमती कल्पना बड़जात्या, जयपुर
13. श्री अशोक एवं श्रीमती.........जैन, घाटकोपर, मुम्बई
14. श्री वीनूभाई एवं श्रीमती कैलाश शाह, मुम्बई